IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

'' टी.एस.पी. क्षेत्र की बालिकाओं की अधिगम शैली का अध्ययन।''

"A Study of Learning Styles of Girls from the T.S.P. Area."

डॉ. बलिदान जैन
सह. आचार्य (षिक्षा)
लोकमान्य तिलक षिक्षण प्रषिक्षण
महाविद्यालय डबोक (उदयपुर)

Abstract

Learning style refers to the preferred ways in which learners perceive, process, and retain information. Understanding the learning styles of students is essential for designing effective teaching–learning strategies, especially in culturally and socially diverse regions. Girls belonging to the Tribal Sub-Plan (T.S.P.) areas often face unique educational challenges due to socio-economic conditions, cultural practices, and limited educational resources.

The present study aims to examine the learning styles of girls studying in T.S.P. areas. It seeks to identify dominant learning style patterns and analyze how these styles influence their learning experiences and academic engagement. The study also attempts to highlight the educational needs of tribal girls in order to support inclusive and learner-centered pedagogy.

The findings of this research are expected to assist teachers, curriculum planners, and educational administrators in adopting appropriate instructional methods that align with the learning preferences of girls from T.S.P. areas. Ultimately, the study emphasizes the importance of understanding learning diversity to promote educational equity, effective learning, and the overall development of tribal girls.

'प्रस्तावना :–

भारतीय संविधान की धारा 46 में उल्लेखित नीति निर्देशक सिद्धान्तों के कमजोर वर्गों के उत्थान का विशेष दायित्व राज्यों पर डाला गया है। संविधान में जनजाति क्षेत्रों में विकास का विशेष प्रावधान है। इन सांविधानिक दायित्वों की पूर्ति के लिए भारत सरकार द्वारा जनजाति के क्षेत्र के विकास सम्बन्धी अन्तरों को समाप्त करने के उद्देश्य से राज्यों को विशेष अनुदान दिए गए। विशेष अनुदान देने के पीछे आशय यह था कि अतिरिक्त राशि का आवंटन कर इन क्षेत्रों में विकास की गति को अन्य क्षेत्रों की तुलना में तीव्र करके आर्थिक समृद्धि लाई जा सकेगी, जिससे जनजाति क्षेत्र का पिछड़ापन कम होगा। कालक्रम में राज्यों में यह धारणा बनने लगी कि जनजाति क्षेत्र के विकास का उत्तरदायित्व केवल केन्द्र सरकार का ही है। किन्तु जनजाति क्षेत्र में सामुदायिक विकास के माध्यम से जो आर्थिक विकास प्रारम्भ किए गए, उनमें भारत सरकार ने विकास के लिए आवंटन किए जाने वाली राशि में कोई बढ़ोतरी नहीं की। पंचवर्षीय

योजनाओं में जनजाति विकास ब्लाकों को गठन किया गया, जहाँ पर 66 प्रतिशत भाग जनजाति जनसंख्या का था।

गृह मंत्रालय के निर्देशानुसार राज्य सरकार द्वारा जनजाति बाहुल्य क्षेत्र के सर्वांगीण विकास की योजनाओं के निर्माण, समन्वय, निर्देशन व उनके प्रभावी क्रियान्वयन हेतु सन् 1975 में जनजातीय क्षेत्रीय विकास विभाग की स्थापना की गई। 8 अक्टूबर, 1975 द्वारा आयुक्त, जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग का एक अलग पद सृजित किया गया तथा अगस्त, 1976 के आदेश द्वारा आयुक्त के कर्तव्य एवं अधिकारों का निर्धारण किया गया। जनजाति विकास कार्यक्रमों को तीव्र गति प्रदान करने के लिए अप्रेल, 1978 में विभाग का मुख्यालय जयपुर से उदयपुर (जनजाति क्षेत्र के मध्य) स्थानान्तरित कर दिया गया।

राज्य के जनजाति विकास के विभिन्न कार्यक्रमों का क्रियान्वयन जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग अपने कार्यक्षेत्र में आने वाले सम्बन्धित विभागों के माध्यम से कर रहा है। विभाग के कार्यक्षेत्र में जनजाति बाहुल्य के निम्नलिखित तीन क्षेत्र सम्मिलित है :–

1. जनजाति उपयोजना क्षेत्र।
2. परिवर्तित क्षेत्र विकास उपागम (माड़ा)।
3. सहरिया आदिम जाति क्षेत्र।

जनजाति विकास कार्यक्रमों के त्वरित क्रियान्वयन हेतु आयुक्त, जनजाति विकास को कृषि, वन, शिक्षा एवं सहकारिता विभागों के विभागाध्यक्षों के अधिकार दिए गए है तथा उपयोजना क्षेत्र के जिलाधीशों सहित विकास से सम्बन्धित सभी क्षेत्रीय व जिला स्तरीय अधिकारियों के कार्यों को निर्देशित व नियन्त्रित करने का अधिकार दिया गया है।

जनजाति उपयोजना क्षेत्र :–

जनजाति उपयोजना में योजना आयोग द्वारा बाँसवाड़ा व डूँगरपुर की सम्पूर्ण तहसीलें, उदयपुर जिले की सात तहसीलें और प्रतापगढ़ जिले को सम्मिलित किया गया था। परन्तु पांचवी पंचवर्षीय योजना के पुनः संशोधित योजना में जनवरी, 1976 (1974–79) को भारत सरकार ने उदयपुर जिले की गोगुन्दा तहसील, जिसका क्षेत्रफल 871.4 वर्ग किलोमीटर, जनसंख्या 83,175 थी, जिसमें आदिवासी जनसंख्या का केवल 37. 23 प्रतिशत ही था, जो कि उपयोजना क्षेत्र के मापदण्ड 50 प्रतिशत से कम होने के कारण जनजाति उपयोजना क्षेत्र में सम्मिलित करने से मना कर दिया। परन्तु भारत सरकार इस बात से सहमत थी कि कोई भी अन्य तहसील जिसकी 50 प्रतिशत जनसंख्या आदिवासी हो तथा जनजाति क्षेत्र से जुड़ा हुआ हो, उसे उपयोजना क्षेत्र में सम्मिलित किया जा सकता है। सिरोही जिले की आबुरोड़ तहसील, जिसकी आदिवासी जनसंख्या 66.33 प्रतिशत थी एवं यह तहसील जनजाति उपयोजना क्षेत्र की सीमाओं से जुड़ा हुआ था। एक अन्य उदयपुर जिले की गिर्वा तहसील को भी उपयोजना क्षेत्र में सम्मिलित किया गया। इसकी आदिवासी जनसंख्या 47.61 प्रतिशत थी एवं जनजाति उपयोजना क्षेत्र की सीमाओं से मिलता हुआ क्षेत्र था।

चूंकि इन दोनों को पहले उपयोजना क्षेत्र में सम्मिलित नहीं किया गया था, इसलिए इनके लिए अलग से सूक्ष्म परियोजना तैयार कर इनको जनजाति उपयोजना क्षेत्र में सम्मिलित किया गया।

आज शिक्षकों को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अधिगम प्रक्रिया सदैव और सर्वत्र चलती रहती है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के अत्यन्त संवेदनशील क्षेत्र में हुए शोध कार्यों ने शिक्षकों को एक नवीन दृष्टि प्रदान की है। इसी क्रम में छात्र अधिगम को प्रभावित करने वाले एक महत्वपूर्ण पक्ष अधिगम शैली को जानने तथा उसे शिक्षण प्रक्रिया में महत्व दिए जाने की आवश्यकता तीव्र होती जा रही है। यह माना जाने लगा है कि किसी भी छात्र को शैक्षिक कार्यक्रम से सम्बन्ध करने का आधार उसके सीखने का तरीका होना चाहिए, अतः छात्र की विशिष्टता को जानकर उसके अनुरूप लचीली विधाओं को अपनाना होगा। शिक्षा के क्षेत्र में कई वर्षों से अध्यापन कार्य करते हुए शोधकर्ता को शिक्षण प्रक्रिया के निरन्तर अधोन्मुख स्वरूप तथा उसके दुष्प्रभाव की प्रत्यक्ष प्रतीति होती रही है। जब बालक किसी भी विषय का अध्ययन अपने तरीके से करता है तो उस विषय के प्रति रस एवं रूचि का विकास होता है, इस कारण बालक की उपलब्धि भी प्रभावित होती है। वर्तमान तथ्यों को देखते हुए शोधार्थी ने यह महसूस किया है कि टी.एस.पी. क्षेत्र की बालिकाओं की अधिगम शैलीं का अध्ययन करना आवश्यक है।

समस्या का औचित्य :–

किसी भी समस्या का औचित्य परीक्षण अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि औचित्य ही समस्या की उपयोगिता सिद्ध करता है शोध का औचित्य इस प्रकार से हैः–

1. टी.एस.पी. क्षेत्र की बालिकाओं की दृष्टि से :– यह शोधकार्य टी.एस.पी. क्षेत्र की बालिकाओं की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इस शोध के माध्यम से यह जाना जा सकेगा कि टी.एस.पी. क्षेत्र की बालिकाएँ किस किस अधिगम शैली से अधिगम करती है तथा किस प्रकार की दुश्चिन्ताओं से ग्रसित रहती है।

2. अभिभावकों की दृष्टि से :– यह लघु प्रयास अभिभावकों की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इस शोध के माध्यम से अभिभावक अपनी बालिकाओं की दुश्चिन्ताओं को दूर कर सकेगे तथा अधिक से अधिक अधिगम कराकर उसकी शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि की जा सकेगी।

3. अनुसंधान की दृष्टि से :– शोध से प्राप्त परिणामों के आधार पर आने वाला शोधार्थी नये चर लेकर इसी विषय पर अन्य अनुसंधान कार्य कर सकेगा।

समस्या कथन :–

'' टी.एस.पी. क्षेत्र की बालिकाओं की अधिगम शैलीं का अध्ययन।''

शोध उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य है :–

1. टी.एस.पी. क्षेत्र की बालिकाओं की अधिगम शैली का अध्ययन करना।

2. टी.एस.पी. क्षेत्र के राजकीय व निजी विद्यालय की बालिकाओं की अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना :–

शोधार्थी द्वारा शोध के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया जो इस प्रकार से है :–

1. टी.एस.पी. क्षेत्र के राजकीय व निजी विद्यालय की बालिकाओं की अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध का परिसीमन :–

समय व धन एवं श्रम को ध्यान में रखते हुए ही अपने भावी शोधकार्य को निम्नलिखित सीमाओं तक सीमित रखा गया है :–

1. राजस्थान के डूँगरपुर जिले तक सीमित रखा गया है।
2. माध्यमिक स्तर की बालिकाओं को लिया गया है।

शोध विधि :–

शोधकार्य में टी.एस.पी. क्षेत्र की बालिकाओं की अधिगम शैली का अध्ययन करना है जिसके लिए आवश्यक है कि वर्तमान तथ्यों का पता लगाकर दत्त संकलन किया जाये उसके लिए सर्वेक्षण विधि उपयुक्त है अतः सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया हैं।

उपकरण :–

अधिगम शैली के लिए स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया है।

विश्वसनीयता गुणांक प्राप्त करने के अर्द्धविच्छेदन विधि का किया गया । विश्वसनीयता गुणांक का मान 0. 7 से अधिक होने पर उपकरण विश्वसनीय माना जाता है। यहाँ 0.98 विश्वसनीयता गुणांक आया। इस प्रकार यह स्वनिर्मित उपकरण विश्वसनीय है। विद्वानों, शिक्षा शास्त्रियों के हाथों से निकलने के कारण प्रस्तुत उपकरण में वैधता है।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्श :–

शोधार्थी द्वारा डूगरपुर जिले के 3राजकीय व 3 निजी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि में लाटरी विधि के द्वारा किया गया है। प्रत्येक विद्यालय से 30 –30 विद्यार्थियों का चयन करते हुए कुल 180 विद्यार्थियों का यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा चयन किया गया है।

शोध के लिए न्यादर्श का स्वरूप इस प्रकार से है:–

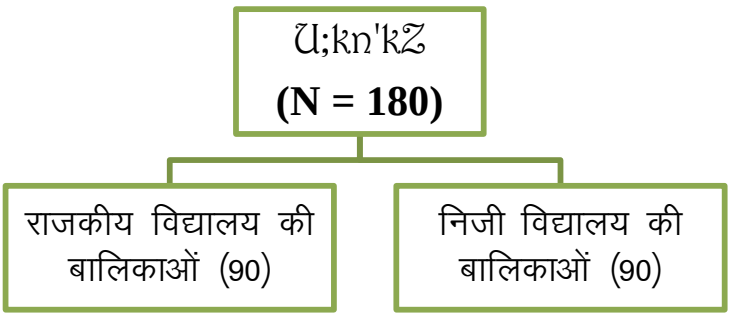

सांख्यिकीय विधि :–

शोधार्थी द्वारा अपने अध्ययन के निष्कर्षों को प्रतिपादित करने हेतु निम्न प्रविधियों का उपयोग किया गया :–

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी–परीक्षण

पारिभाषिक शब्दावली :–

शोधार्थी द्वारा शोध में जिन विशिष्ट शब्दों का प्रयोग करेगा उनका पारिभाषिकीकरण इस प्रकार से हैः–

- टी.एस.पी. क्षेत्र :– जनजाति उपयोजना क्षेत्र में डूंगरपुर, बासवाड़ा एवं प्रतापगढ़ है। इसमें जनजाति विद्यार्थियों की बहुलता है।

टी.एस.पी. गाईड लाईन के अनुसार

- अधिगम शैली :– अधिगम शैली से तात्पर्य उन विविध तथा विशिष्ट तरीकों से हैं जिनके माध्यम से बालक सर्वाधिक प्रभावी ढंग से अध्ययन कर सीखता है।

विश्लेषण एवं व्याख्या :–

शोधार्थी ने दत्तो का विश्लेषण निम्नलिखित उद्देश्यों को लेकर किया गया जो इस प्रकार से हैः–

1. टी.एस.पी. क्षेत्र की समग्र न्यादर्श बालिकाओं की अधिगम शैली का अध्ययन करना।
2. टी.एस.पी. क्षेत्र के राजकीय व निजी विद्यालय की बालिकाओं की अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अधिगम शैली का विश्लेषण

सारणी संख्या 1

टी.एस.पी. क्षेत्र की समग्र न्यादर्श बालिकाओं की अधिगम शैली का मध्यमानवार विश्लेषण

क्र.स.	शैली का नाम	कट पोइंट मध्यमान	मध्यमान
1	तार्किक शैली	10	15.55
2	श्रव्य शैली	10	16.23
3	दृश्य शैली	10	17.20
4	मौखिक शैली	10	14.66

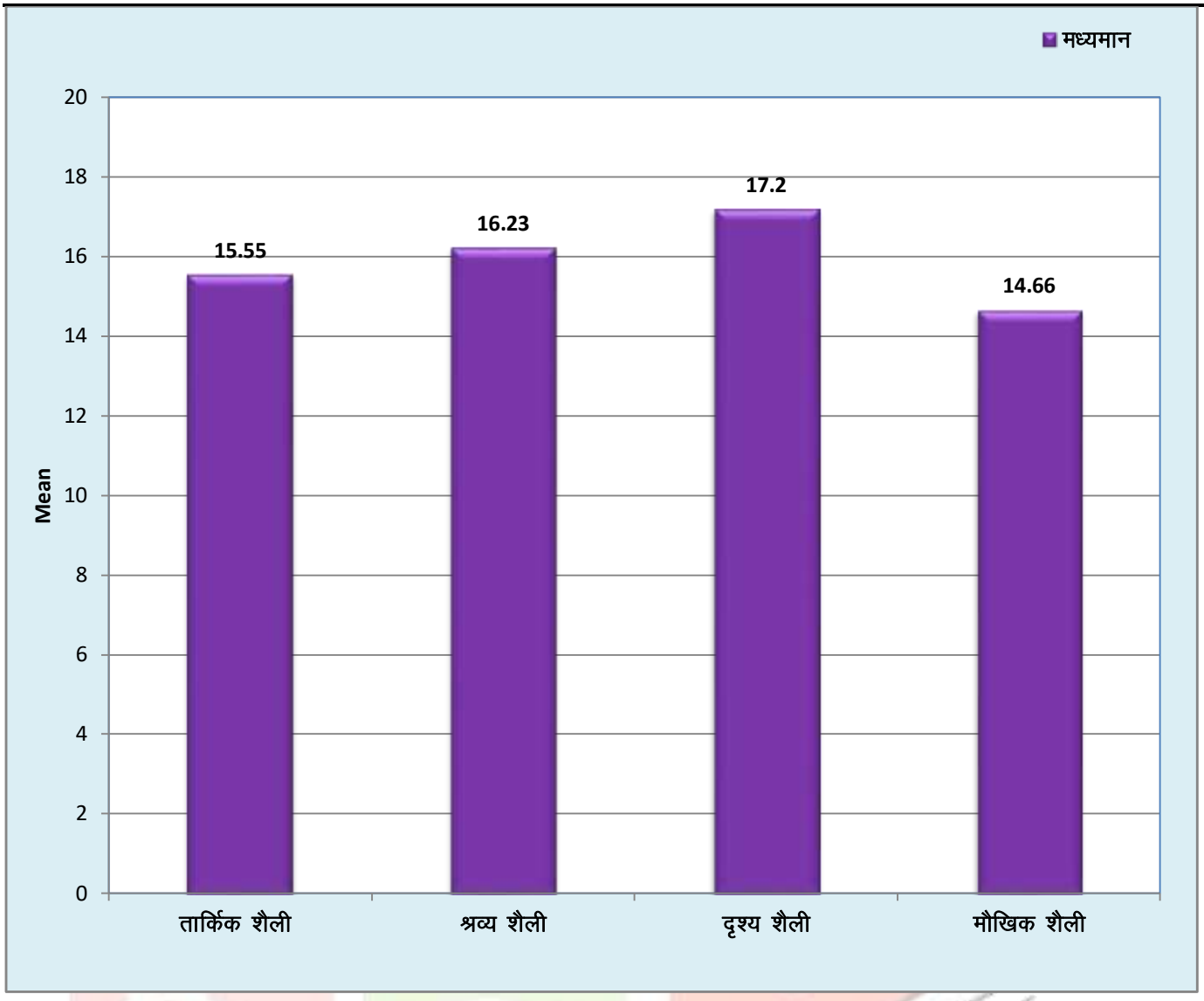

आरेख संख्या 1

टी.एस.पी. क्षेत्र की समग्र न्यादर्श बालिकाओं की अधिगम शैली का मध्यमानवार विश्लेषण

1. तार्किक शैली के सभी कथनों पर टी.एस.पी. क्षेत्र की समग्र बालिकाओं द्वारा व्यक्त राय के प्राप्ताकों का मध्यमान 15.55 .प्राप्त हुआ, जो कि इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 10 से अधिक पाया गया। अतः **टी.एस.पी. क्षेत्र की समग्र न्यादर्श बालिकाएँ अधिगम के लिए तार्किक शैली का प्रयोग करती है।**

2. श्रव्य शैली के सभी कथनों पर टी.एस.पी. क्षेत्र की समग्र बालिकाओं द्वारा व्यक्त राय के प्राप्ताकों का मध्यमान 16.23 .प्राप्त हुआ, जो कि इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 10 से अधिक पाया गया। अतः **टी.एस.पी. क्षेत्र की समग्र न्यादर्श बालिकाएँ अधिगम के लिए श्रव्य शैली का प्रयोग करती है।**

3. दृश्य शैली के सभी कथनों पर टी.एस.पी. क्षेत्र की समग्र बालिकाओं द्वारा व्यक्त राय के प्राप्ताकों का मध्यमान 17.23 .प्राप्त हुआ, जो कि इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 10 से अधिक पाया गया। अतः **टी.एस.पी. क्षेत्र की समग्र न्यादर्श बालिकाएँ अधिगम के लिए दृश्य शैली का प्रयोग करती है।**

4. मौखिक शैली के सभी कथनों पर टी.एस.पी. क्षेत्र की समग्र बालिकाओं द्वारा व्यक्त राय के प्राप्ताकों का मध्यमान 14.66 .प्राप्त हुआ, जो कि इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 10 से अधिक पाया गया। अतः **टी.एस.पी. क्षेत्र की समग्र न्यादर्श बालिकाएँ अधिगम के लिए मौखिक शैली का प्रयोग करती है।**

सारणी सं. – 2

टी.एस.पी. क्षेत्र के राजकीय व निजी विद्यालय की बालिकाओं की अधिगम शैलियों का तुलनात्मक विश्लेषण

क्र. सं.	क्षेत्र का नाम	मध्यमान		मानक विचलन		टी–मान	सार्थकता स्तर
		राजकीय विद्यालय की बालिकाएँ	निजी विद्यालय की बालिकाएँ	राजकीय विद्यालय की बालिकाएँ	निजी विद्यालय की बालिकाएँ		
1.	तार्किक शैली	13.66	17.44	3.33	4.34	6.56	0.01 स्तर पर सार्थक है।
2.	श्रव्य शैली	15.99	16.47	4.28	4.32	0.75	दोनो स्तर पर असार्थक है।
3.	दृश्य शैली	18.88	15.52	6.39	3.18	4.47	0.01 स्तर पर सार्थक है।
4.	मौखिक शैली	15.24	14.08	4.67	5.58	1.51	दोनो स्तर पर असार्थक है।

df = 178 के सारणीमान

0.05 स्तर पर सारणीमान – 1.97

0.01 स्तर पर सारणीमान – 2.60

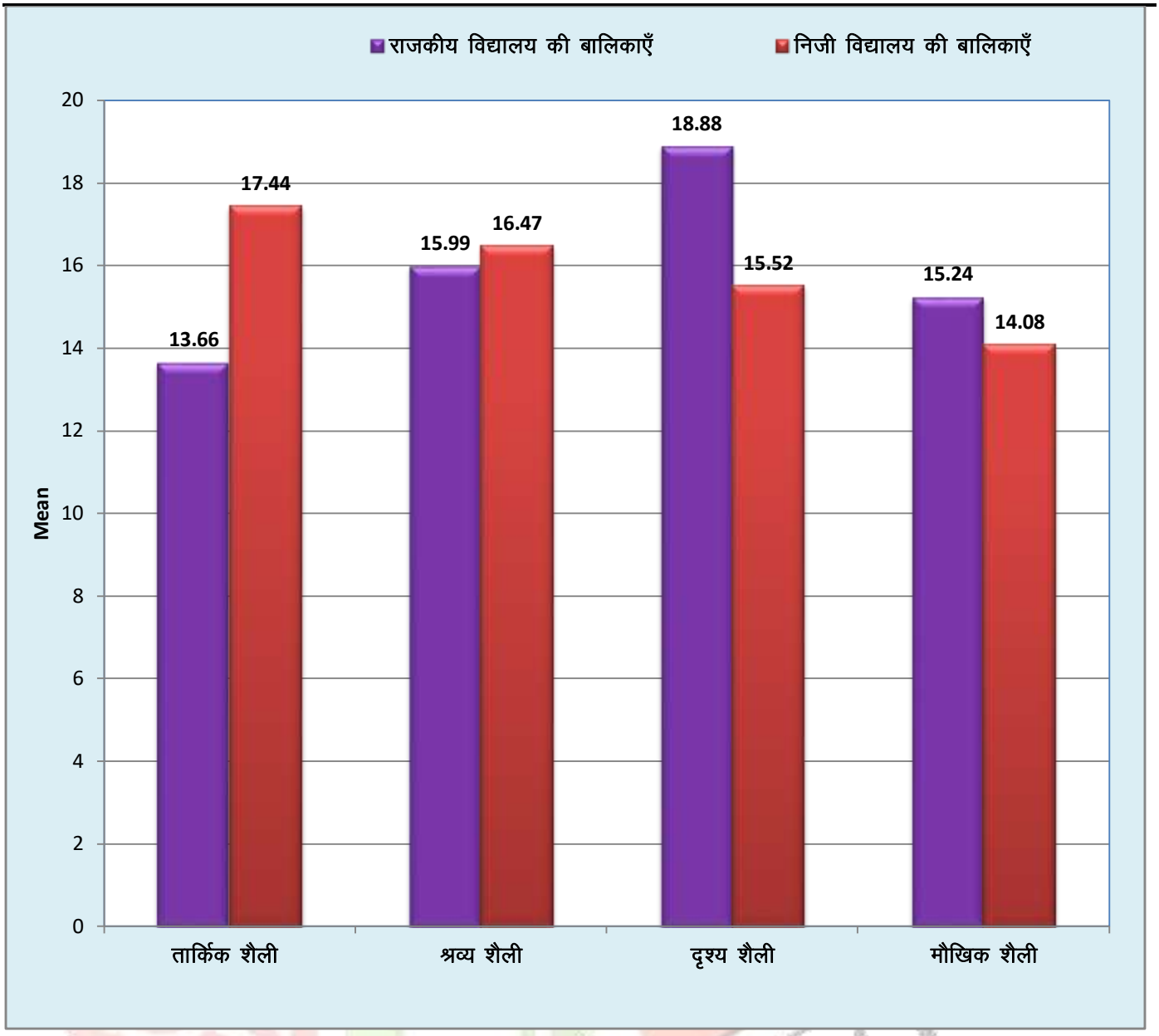

आरेख संख्या 2

टी.एस.पी. क्षेत्र के राजकीय व निजी विद्यालय की बालिकाओं की अधिगम शैलियों का तुलनात्मक विश्लेषण

उपरोक्त सारणी से निम्नलिखित परिणाम परिलक्षित होते है :–

क्षेत्रवार विश्लेषण :–

1. तार्किक शैली :– टी.एस.पी. क्षेत्र के राजकीय व निजी विद्यालय की बालिकाओं की अधिगम शैली के तुलनात्मक अध्ययन हेतु क्षेत्र तार्किक शैली पर प्राप्त अंको का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 13.66, 17.44 तथा 3.33, 4.34 प्राप्त हुआ। दोनो समूहो के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की जाँच के लिए टी–मूल्य निकाला गया, जिसका मान 6.56 आया जो $df = 178$ के 0.01 स्तर के सारणीमान 2.60 से अधिक पाया गया अर्थात् दोनो समूहो के मध्यमानों के मध्य में सार्थक अन्तर पाया गया। निष्कर्षतः **टी.एस.पी. क्षेत्र के निजी विद्यालय की बालिकाएँ अधिगम करने के लिए तार्किक शैली का प्रयोग राजकीय विद्यालय की बालिकाओं की अपेक्षा अधिक करती है।**

2. श्रव्य शैली :– टी.एस.पी. क्षेत्र के राजकीय व निजी विद्यालय की बालिकाओं की अधिगम शैली के तुलनात्मक अध्ययन हेतु क्षेत्र श्रव्य शैली पर प्राप्त अंको का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 15.99, 16.47 तथा 4.28, 4.32 प्राप्त हुआ। दोनो समूहो के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की जाँच के लिए टी–मूल्य निकाला गया, जिसका मान 0.75 आया जो df =178 के 0.05 स्तर के सारणीमान 1.97 से कम पाया गया अर्थात् दोनो समूहो के मध्यमानों के मध्य में सार्थक अन्तर नहीं है। निष्कर्षतः **टी.एस.पी. क्षेत्र के राजकीय व निजी विद्यालय की बालिकाएँ अधिगम के लिए श्रव्य शैली का प्रयोग समान रूप से करती है।**

3. दृश्य शैली :– टी.एस.पी. क्षेत्र के राजकीय व निजी विद्यालय की बालिकाओं की अधिगम शैली के तुलनात्मक अध्ययन हेतु क्षेत्र दृश्य शैली पर प्राप्त अंको का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 18.88, 15.52 तथा 6.39, 3.18 प्राप्त हुआ। दोनो समूहो के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की जाँच के लिए टी–मूल्य निकाला गया, जिसका मान 4.47 आया जो df =178 के 0.01 स्तर के सारणीमान 2.60 से अधिक पाया गया अर्थात् दोनो समूहो के मध्यमानों के मध्य में सार्थक अन्तर है। निष्कर्षतः **टी.एस.पी. क्षेत्र के राजकीय विद्यालय की बालिकाएँ अधिगम के लिए दृश्य शैली का प्रयोग समान रूप से करती है।**

4. मौखिक शैली :– टी.एस.पी. क्षेत्र के राजकीय व निजी विद्यालय की बालिकाओं की अधिगम शैली के तुलनात्मक अध्ययन हेतु क्षेत्र मौखिक शैली पर प्राप्त अंको का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 15.24, 14.08 तथा 4.67, 5.58 प्राप्त हुआ। दोनो समूहो के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की जाँच के लिए टी–मूल्य निकाला गया, जिसका मान 1.51 आया जो df =178 के 0.01 स्तर के सारणीमान 1.97 से कम पाया गया अर्थात् दोनो समूहो के मध्यमानों के मध्य में सार्थक अन्तर है। निष्कर्षतः **टी.एस.पी. क्षेत्र के राजकीय व निजी विद्यालय की बालिकाएँ अधिगम के लिए मौखिक शैली का प्रयोग समान रूप से करती है।**

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Civil Jeanie 2003 Stress management London : Spire press.
2. Cooper, L.L. 1983 Stress research issues for the 80's New York John Wiley.
3. Castlema, M.C. 1992 How the experts cope with stress in.
4. Christopher, Kanka 1999 Gajedra and Floret et at Adjustment stress and family life in adolescents in Canada, Brittan Hong Kong, Indian, Pakistan and Philippines. International Journal of Adolescents and youth,
5. D.M. Pastonjee 1999 Studies in organizational role stress and coping Jaipur/Nere Delhi
6. Deven Port, N.R. 1991 A comparative study of stress and coping skills among learning disabled and Regular Education Students (Doctoral Dissertation, state University of Gowa.
7. Farber I.E. and Spence. K.W. 1956 Effect of Anxiety stress and task variables on reaction time, Journal of personality.
8. Fourth Survey of research in Education 1983-88 Ed. Dr. M.B. Buch New Delhi NCERT

9. Fulton, M.A. 1990 The Effects of two different relaxation. Treatments on stress anxiety (Doctoral Dissertation, Lehigh University, 1990

10. Flirm and Mark 1999 Family Environment Stress and Health During Childhoo, Hormones, Health and Behavior (1999) 105, - 138

11. Goldsten, M.J. 1973 Individual Differences in response to stress America Journal of Community Psychology 2 113-137

12. Kaln at al 1964 Organizational Stress, studies in Role conflict and Ambiguity, New York

13. Keeves J.P. 1973 International Encyclopedia of Education, International Review of education Stockholm.

14. कपिल एच. के. 1981 अनुसंधान विधियाँ आगरा : हरप्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन।

15. शर्मा, आर. ए. 1984 शिक्षण अधिगम के नवीन परिवर्तन, मेरठ, इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस।

16. भटनागर, सुरेश 1995 शिक्षण अधिगम एवं विकास का मनोविज्ञान।

17.

18. सुखिया एवं मेहरोत्रा 1969 शैक्षिक अनुसंधान के मूलतत्व, विनोद पुस्तक भण्डार, आगरा।

19. ढोढियाल, एस. एन. एवं फाटक ए. बी. 1982 शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

20. Carter, V Good C.V. Bar, A.S. Scates, D.E. 1973 Methodology of educational Research, New York.

21. Rao Kiran Moudad Shanaz and Subbarishna, D.K. 2000 Appraisal of stress and coping Behavior in college students

22. Buch M.B. A Second survey of Research in Education" Borada. Society for education Researcher and development.

23. Femnades C. and V. Murthy, 1989 A Study of Job Related stress and bumout in Middle and Secondary school teachers unpublished Manuscript.

Dictionary and Encyclopedias :

1. J.P. Chaplin. (1968) "Dictionary of Psychology"
2. "Compact edition of oxford English Dictionary"
3. "Oxford advanced Learner's Dictionary of current English" 1995. Edition edited by A.S. Horn.
4. Carter V. Good "Dictionary of Education" (1974) New York M.C. Gray, Hills Book.